Cambridge International Examinations
Cambridge International General Certificate of Secondary Education

CANDIDATE NAME

CENTRE NUMBER | CANDIDATE NUMBER

2908009865

HINDI AS A SECOND LANGUAGE **0549/13**

Paper 1 Reading and Writing **May/June 2014**

2 hours

Candidates answer on the Question Paper.

No Additional Materials are required.

READ THESE INSTRUCTIONS FIRST

Write your Centre number, candidate number and name on all the work you hand in.
Write in dark blue or black pen.
Do not use staples, paper clips, glue or correction fluid.
DO **NOT** WRITE IN ANY BARCODES.

Answer **all** questions.

At the end of the examination, fasten all your work securely together.
The number of marks is given in brackets [ ] at the end of each question or part question.

The syllabus is approved for use in England, Wales and Northern Ireland as a Cambridge International Level 1/Level 2 Certificate.

This document consists of **13** printed pages and **3** blank pages.

DC (NF/CW) 84418/4
© UCLES 2014

खंड 1

अभ्यास 1 प्रश्न 1–6

‘आयुर्वेदिक मालिश के लिए आएं केरल’ पर निम्नलिखित आलेख पढ़िए तथा दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

व्यस्तता भरी जिंदगी से थकान और तनाव को दूर करने के लिए अनेक उपायों में आयुर्वेद चिकित्सीय पद्धति है जिसका इस्तेमाल भारत में पिछले 5000 सालों से किया जा रहा है। विशेषकर आयुर्वेदिक मालिश उपचार भारत की सबसे प्राचीन पद्धति है जिसमें आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों और प्राकृतिक तेलों के माध्यम से शरीर की मालिश की जाती है। शरीर को सुडौल बनाने, दर्द कम करने, थकान मिटाने और तनाव कम करने जैसे कई गुणों से भरी मालिश आज भारत में लोकप्रिय है। आयुर्वेदिक उपचार का सही समय मानसून के दौरान जून से सितंबर के बीच होता है क्योंकि इस समय वातावरण नम, ठंडा और धूल रहित रहता है, जिससे आपका शरीर प्राकृतिक तेलों को ज्यादा से ज्यादा ग्रहण करता है।

इसमें प्रयोग लाई जाने वाली आयुर्वेदिक औषधियां पाचन, तनाव और चिरकालिक रोगों के लिए एक बेहतर और प्रभावशाली उपाय है। इसका प्रयोग सौंदर्य कार्यों के लिए भी होता है। अगर आप इस पद्धति के ज़रिए अपना उपचार करवाना चाहते हैं तो आप को कम से कम दो हफ़्ते का समय देना पड़ेगा। इस दो हफ्ते के दौरान प्राकृतिक और अन्य जड़ी-बूटियों के ज़रिए आपकी मालिश की जाएगी।

अनुकूल वातावरण और औषधीय जड़ी-बूटियों की भारी मात्रा में मौजूदगी होने की वजह से केरल के अधिकतर क्षेत्र आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति के लिए उपयुक्त माने जाते रहे हैं। केरल के अलावा गोवा और कर्नाटक के आयुर्वेदिक अस्पताल, आयुर्वेदिक गृह और यहां तक कि पांच सितारा होटलों में भी इस तरह के उपचार किए जाते हैं। आप आयुर्वेदिक हाउसबोट में भी इसकी सेवा ले सकते हैं। इसके लिए आपको पहले से ही बुक करवाना होगा।

अगर आप आयुर्वेदिक मालिश के ज़रिए अपना उपचार कराना चाहते हैं तो आपके लिए सबसे सस्ती जगह आयुर्वेदिक अस्पताल होगा। यहां मात्र एक हजार डॉलर में आप अपना उपचार करा सकते हैं। इसके लिए आपको 20–30 दिन का समय देना होगा। आप आश्रय गृह में भी इस चिकित्सीय पद्धति के जरिए अपना इलाज करा सकते हैं। यहां आपको एक दिन के लिए 60 से 100 डॉलर खर्च करने पड़ेंगे। यदि आप आयुर्वेदिक हाउसबोट में रहकर अपना उपचार करवाना चाहते हैं तो इसके लिए आपको 1000–1500 डॉलर खर्च करने पड़ेंगे।

1 आयुर्वेदिक मालिश किन पदार्थों द्वारा की जाती है?

.... [1]

2 मानसून में मालिश करने से शरीर को क्या लाभ मिलता है?

.... [1]

3 पाचन, तनाव और चिरकालिक रोगों के अलावा इस चिकित्सा का प्रयोग अन्य किस कार्य के लिए किया जाता है?

.... [1]

4 केरल के स्थानों को इस चिकित्सा के लिए क्यों उचित माना गया?

.... [1]

5 आयुर्वेदिक अस्पताल गृह और हाउसबोट के अलावा ये सेवाएं कहाँ उपलब्ध हैं?

.... [1]

6 कहाँ यह सेवा सर्वाधिक मंहगी होती है?

.... [1]

[अंक:6]

अभ्यास 2 प्रश्न 7

जयपुर साहित्य उत्सव में भाग लेकर दुनिया के प्रसिद्ध लेखकों से मिलने के दुर्लभ अवसर का लाभ उठाइए

जयपुर साहित्य उत्सव

सावित्री नगर, जयपुर

दूरभाष 00-91- 29077423, 00-91-89453847

चार दिवसीय साहित्य उत्सव में स्वंयसेवी सदस्य बनने के लिए आवेदन

प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी जयपुर साहित्य उत्सव आयोजित किया जा रहा है। इस उत्सव में चुने गए स्वंयसेवियों को दुनियाभर से आए अनेक बड़े लेखकों और बुद्धिजीवियों के साथ मिलने का अवसर मिलेगा। उत्सव के दौरान बिकने वाली सभी किताबों पर स्वंयसेवियों को पचास प्रतिशत की छूट भी मिलेगी।

शमशेर की उम्र 15 वर्ष है। पुस्तकों के प्रति विशेष आकर्षण के कारण वह पिछले 2 वर्षों से स्कूल पत्रिका का संपादक भी है। पत्रिका को सुंदर बनाने के लिए उसने कई दिलचस्प स्तंम्भों को शामिल किया है। इनमें साहित्यिक रचनाएं पत्रिका का प्रमुख अंग हैं। नए लेखकों को पढ़ना और उनके बारे में जानना उसका प्रमुख शौक है। उसकी लघु कहानी पिछले वर्ष की पत्रिका में भी छप चुकी है। भविष्य में वह ख़ुद भी लेखक बनना चाहता है। शमशेर जयपुर साहित्य उत्सव के बारे में कई दिलचस्प रिपोर्ट पत्र-पत्रिकाओं में पहले ही पढ़ चुका है। क्योंकि सप्ताह के दौरान शमशेर स्कूल जाता है और उसका स्कूल दोपहर 2 बजे समाप्त होता है इसलिए वह 2 बजे के बाद ही समय निकाल सकता है। लेकिन उसके माता-पिता नहीं चाहते हैं कि शमशेर 8 बजे के बाद घर से बाहर रहे। शमशेर सप्ताहांत को अपने मनपसंद खेल क्रिकेट के अभ्यास को नहीं छोड़ना चाहता। शमशेर जयपुर के रंगीन अपार्टमेंट के फ्लैट न. 38 में रहता है। उसका टेलिफोन न. 00-91-28432979 और ई-मेल है ss49@indie.org

आप अपने को शमशेर मानकर नीचे दिए गए आवेदन पत्र को भरिए।

जयपुर साहित्य उत्सव, जयपुर।

दूरभाष 00-91-29077423, 00-91-89453847

आवेदक का नाम .....शमशेर......

(सही का निशान लगाएं) आयु - 14–15 ☐ 16–17 ☐ 18–19 ☐

ई-मेल - ....

पूरा पता - ....

....

शहर - ....

निम्नलिखित विकल्पों के माध्यम से बताइए कि आप कब उपलब्ध हैं। [कोष्ठक में सही का निशान लगाएं]

☐ सप्ताह के दौरान।

☐ सप्ताहांत में।

निम्नलिखित अवधियों में से उचित अवधि चुनें। [कोष्ठक में सही का निशान लगाएं]

☐ **सुबह 10 बजे से 1 बजे तक**

☐ **दोपहर 3 बजे से रात 7 बजे तक**

लेखन संबंधी कार्यों के बारे में बताइए

....

....

....

[अंक: 7]

अभ्यास 3 प्रश्न 8–11

'स्वांग की लोक परंपरा' शीर्षक से निम्नलिखित लेख पढ़िए।

उत्तर प्रदेश, हरियाणा और राजस्थान में स्वांग एक सदियों पुरानी परंपरा है। रियासत काल में इसके कलाकार राजा-महाराजाओं और पौराणिक पात्रों के चरित्र का स्वांग रचते, लोगों का मनोरंजन करते और इसके साथ अच्छाई का संदेश देते। स्वांग के कलाकार खुद को 'सांगी' कहते हैं। वे स्वांग करते हैं और गांव कस्बो की थकी-हारी ज़िन्दगी का दिल बहलाते हैं।

राजा-महाराजाओं के दरबार में भी स्वांग किया जाता था। ये सिलसिला सैंकड़ो साल पुराना है। उस दौर में पुरानी गाथाओं को नाट्य विधा के जरिये मंचित किया जाता था। ये काम अब भी जारी है। हरियाणा में तो अब भी स्वांग देहात-कस्बो में मंचित होता है। इसके कलाकार राजनीतिक सभाओं, महफिलों और मेलों में रौनक बिखेरते है। मगर दूसरे प्रांतों में इसका दायरा सिमट रहा है।

नाट्य संस्था संचालक सुरेन्द्र कुमार स्वांग के आयोजन से जुड़े हैं। वे कहते हैं, "यह एक पारंपरिक लोक कला है। सिनेमा और टी.वी. तो अभी आए है। स्वांग तो पृथ्वीराज चौहान के दौर में भी होता था। यह हमारे पुरखों की कला है। इस कला से हम दिल से जुड़े हैं। पर अब हमको दुःख होता है, हमारी पहले जैसी कद्र नहीं है। हम अपनी कद्र बढ़ाना चाहते हैं। हम इसके जरिये सत्य का प्रचार करते हैं जैसे राजा हरिश्चंद्र सत्यवादी थे। हम उनके चरित्र को लोगों के सामने पेश करते हैं।"

यू.पी. में मुज्जफरनगर के संजय स्वांग के कलाकार हैं। वे कहते हैं स्वांग सिनेमा और टी. वी. धारावाहिकों से बेहतर है। इसे पूरे परिवार के साथ आप देख सकते हैं। वे कहते हैं - पहले का दौर कुछ और था। जब शर्म हया थी, छोटे बड़े की कद्र थी। आज ऐसी फिल्में हैं जो घर परिवार में नहीं देख सकते। लेकिन स्वांग की कहानी ऐसी होती है कि माँ, पिता, बहिन, भाई, बच्चे सब एक साथ देख सकते हैं। टी. वी. और सिनेमा में बहुत कुछ बनावटी है। मगर हमारी कला में ऐसा नहीं है। लोग देखते और दिल से तारीफ़ करते हैं।

भारत में प्रजातंत्र आया, राजनीति बलवान हुई। लेकिन इसके साथ ही स्वांग और नौटंकी जैसी लोक कलाओं की कद्र घट गई। मानो अब जीवंत स्वांग तो राजनीतिक मंचो का चहेता हो गया, ऐसे में कोई अभिनीत स्वांग क्यों देखे? ये ही इन कलाकारों की पीड़ा है।

अभ्यास 3 प्रश्न 8–11

आपके स्कूल में एक वाद विवाद प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। प्रतियोगिता का विषय है कि क्या सिनेमा और टेलिविज़न पारंपरिक लोककलाओं की लोकप्रियता के लिए बड़ी चुनौती है स्वांग की लोक परंपरा नामक लेख में से नीचे दिए गए प्रत्येक शीर्षक के अंतर्गत नोट लिखें जिसपर आपका भाषण आधारित होगा।

8 पारंपरिक लोककला स्वांग के चरित्र किन पात्रों पर आधारित होते थे?

- .... [1]
- .... [1]

9 स्वांग लोककला की प्राचीनता से संबंधित तथ्यों के बारे में लिखिए?

- .... [1]
- .... [1]

10 सिनेमा और टी.वी. की अपेक्षा क्यों स्वांग मनोरंजन का बेहतर विकल्प है?

- .... [1]
- .... [1]

11 स्वांग का महत्व क्यों घट रहा है?

- .... [1]

[अंक:7]

अभ्यास 4 प्रश्न –12

निम्नलिखित आलेख के आधार पर सारांश लिखिए और बताइए किस सीमा तक वैकल्पिक मुद्रा को लोगों ने अपनाया है आलेख की मुख्य बातों को अपने शब्दों में लिखिए।

आपका सारांश 100 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

संगत बिन्दुओं के समावेश के लिए 6 अंक और भाषिक अभिव्यक्ति के लिए 4 अंक निर्धारित हैं। पाठांश से वाक्य उतारना उचित नहीं है।

वोलोस मध्य ग्रीस का बंदरगाह वाला शहर है। जैसाकि आप जानते हैं यूरोपीय संघ के देशों की मुद्रा यूरो है। यूरोपीय संघ के अलग अलग देशों को जोड़ने में यूरो मुद्रा की केन्द्रीय भूमिका है। ग्रीस भी यूरोपीय संघ का अंग है और इसलिए यहां भी यूरो मुद्रा का प्रयोग होता है। लेकिन वोलोस में यूरो मुद्रा के साथ साथ वैकल्पिक मुद्रा का चलन भी होता है। यहाँ कपड़ों से लेकर अंडे तक और बिजली के सामान तक सब कुछ बिक्री के लिए उपलब्ध है। लोग सामान खरीदने और बेचने के लिए देश की मुद्रा यूरो का नहीं बल्कि एक स्थानीय वैकल्पिक मुद्रा का इस्तेमाल करते हैं। इसे टी.ई.एम. यानि टेम कहा जाता है। अगर आपको कोई सामान बेचना है या फिर कोई सेवाएं देनी हैं तो इसका इस्तेमाल किया जाता है।

एक यूरो एक टेम के बराबर है। इस टेम मुद्रा के इस्तेमाल से आप जो चाहे खरीद सकते हैं। ये पूरी प्रणाली कंप्यूटर के ज़रिए ऑनलाइन है। बाज़ारों में कंप्यूटर लगाए गए हैं ताकि लेन देन की प्रक्रिया को पूरा किया जा सके। ख़रीदी गई वस्तु की कीमत के बदले जितने टेम खर्च किए जाते हैं उन्हें बेचने वाले के ख़ाते में जमा कर दिया जाता है।

इस मुद्रा के संस्थापक कहते हैं "ये काफी आकर्षक है क्योंकि लोगों को यहाँ काफ़ी उम्मीदें नज़र आती हैं।" अब तक 800 से ज़्यादा लोग इस प्रक्रिया के सदस्य बन चुके हैं। क्या ये यहाँ की मुद्रा यूरो पर हावी हो जाएगी? इस सवाल के जवाब में वह हँसते और कहते हैं कि “मुझे नही मालूम, देखा जाएगा।” लेकिन वोलोस के मेयर कहते हैं कि “यूरो को टेम से कोई ख़तरा नहीं है। उन्होंने खुद औपचारिक रूप से इसे मंजूरी दी है। उन्हें लगता है कि दोनों मुद्राएं एक साथ चल सकती हैं। टेम यूरो की जगह नहीं लेगी बल्कि इससे यूरो को मज़बूती मिलेगी। ग्रीस यूरो ज़ोन में है और हम यूरो ज़ोन में ही रहना चाहते हैं। शहर में वैकल्पिक करेंसी का दायरा बढ़ता ही जा रहा है और काफी लोग इस पर निर्भर हैं।”

स्थानीय निवासी के अनुसार “यह हमें याद दिलाता है हम कैसे बड़े हुए। शुरू से ही लगभग सभी चीज़ें हम अपने पड़ोसियों के साथ बांटते थे। ताकि सभी लोगों को अपने ज़रूरत की वस्तुएं मिल जाएं।” एक व्यवसायी कहती हैं, “टेम ने हमें अपने उत्पादों को बेचने का एक मौका दिया है। मैं गांव में पली बढ़ी हूँ। ये वही पुराने ज़माने वाला तरीका है, जब मुद्रा का प्रचलन था ही नही। तो ये फिर से शुरुआत करने जैसा है।” सभी उम्र के लोगों में टेम मुद्रा का प्रचलन काफी बढ़ता जा रहा है। जो लोग यूरो में भुगतान नही कर सकते वो इस मुद्रा को अपना रहे हैं।

© UCLES 2014

वैकल्पिक मुद्रा

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

.... [अंक: 10]

© UCLES 2014

[कृपया पृष्ठ उलटें

खंड 2

अभ्यास 5 प्रश्न 13–20

निम्नलिखित आलेख को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

माया पटेल के इशारे पर न्यूयॉर्क में चलती हैं टैक्सियाँ

न्यूयॉर्क के टैक्सी चालक संगठन से शुरुआत करने वाली माया पटेल, चाहे कोई प्रदर्शन हो या कोई और कार्यक्रम हमेशा भारतीय महिलाओं की परंपरागत वेशभूषा में नज़र आती हैं। वे दुबली पतली, करीब 5 फुट लंबी हैं और नर्म आवाज में बोलती हैं। लेकिन उन्होंने टैक्सी चालकों के हित में आवाज उठाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। गुजरात के सूरत शहर के पास एक छोटे से गांव बदेली में जन्मी माया पटेल सिर्फ छह वर्ष की आयु में अपने माता-पिता और दो बड़े भाइयों के संग अमरीका आकर बस गईं थीं।

38 वर्षीय माया पटेल ने कॉलेज से अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद ही न्यूयॉर्क शहर के टैक्सी चालकों की मदद करना शुरू कर दिया था। न्यूयॉर्क में करीब 50 हजार टैक्सियाँ चलती हैं। टैक्सी चालन का यह रोज़गार भी करोड़ों डॉलर का उद्योग बन चुका है। करीब 10 लाख लोग रोज़ाना टैक्सी का प्रयोग करते हैं और इसीलिए शहर की अर्थव्यवस्था में भी टैक्सी चालकों का बड़ा योगदान रहता है।

अधिकतर चालक ज्यादा शिक्षित नहीं होते और अंग्रेजी भाषा का ज्ञान भी सीमित होता है। जिससे उन्हें कोई और काम ढूंढने में भी मुश्किल होती है। "मुझे तो भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश से आए इन टैक्सी चालकों को साथ में काम करते देख बहुत खुशी होती है। सब एक दूसरे की मदद करने को तैयार रहते हैं"। लेकिन टैक्सी चालकों को टैक्सी चलाने से पहले ही टैक्सी हासिल करने के लिए हजारों डॉलर भरना पड़ता है। इन मुश्किलों का ज़िक्र करते हुए माया पटेल बताती हैं, "टैक्सी चालकों को तंग किया जाता है। उनके पास लगातार कमाई का कोई ज़रिया नहीं होता, कोई स्वास्थ्य बीमा नहीं होता। उनको कोई छुट्टी नहीं मिलती।"

इन्हीं मुश्किलों को उजागर करने के लिए माया पटेल ने 1998 में एक हड़ताल की घोषणा की। न्यूयॉर्क में उस दिन पूरे शहर में टैक्सी की हड़ताल हुई। उस हड़ताल के सफल होने के बाद माया पटेल खबरों में छा गईं। लेकिन वह मानती हैं कि इन टैक्सी चालकों द्वारा अपनाए जाने में महिला होने के कारण उन्हें कुछ समय लगा। वे कहती हैं कि शुरू में कई ड्राइवर यह समझते थे कि वह कोई पत्रकार या किसी संस्था की कार्यकर्ता हैं और कई लोग उन्हे गम्भीरता से नहीं लेते थे। लेकिन वे कहती हैं कि उन्होंने अपना काम पूरे जोर-शोर से जारी रखा और धीरे-धीरे टैक्सी चालक, शहर के अधिकारीगण और यहां तक कि पत्रकार भी उन्हें पूरी गंभीरता से लेने लगे।

कृपया प्रश्न 13 से 16 तक के उत्तर सही या ग़लत के कोष्ठक में ✓ का निशान लगाकर दीजिए। यदि वाक्य ग़लत है तो उसे पाठांश के आधार पर ठीक कीजिए।

	सही	ग़लत
उदाहरण - माया हमेशा आधुनिक वेशभूषा में नज़र आती हैं। **औचित्य – माया हमेशा परंपरागत वेशभूषा में नज़र आती हैं।**		✓
13 शहर की अर्थव्यवस्था में टैक्सी चालकों का भी विशाल अंश है।		
14 ज़्यादातर चालकों का कम शिक्षित होना समस्या नहीं बनता है।		
15 माया भारत, बांग्लादेश और पाकिस्तान के लोगों के साथ काम करके आनन्दित होती हैं।		
16 वे स्वास्थ्य बीमा और कमाई के अभाव में रहते हैं।		

अब निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

17 माया पटेल ने चालकों की कठिनाइयों को उजागर करने के लिए क्या कदम उठाया?

.... [1]

18 चालकों द्वारा माया को अपना नेता स्वरूप स्वीकार करने में अधिक समय क्यों लगा?

.... [1]

19 माया के बारे में टैक्सी चालकों को किस तरह के संदेह पैदा हुए?

.... [1]

20 माया की किस विशेषता ने चालकों और पत्रकारों को गंभीरता से स्वीकार करने पर विवश किया?

.... [1]

[अंक:10]

अभ्यास 6 प्रश्न 21

सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिए स्कूली शिक्षा ही नहीं खेलकूद भी आनिवार्य है? क्या आप मानते हैं कि रोज़ाना की पढ़ाई के साथ साथ खेलकूद एवं अन्य गतिविधियों में हिस्सा लेने से सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास होता है। अपने विचारों को स्कूल की पत्रिका में छपवाने के लिए इस विषय पर अपना निबंध लिखिए।

आपका निबंध 150 या 200 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

लिखित निबंध पर अंर्तवस्तु के लिए 10 अंकों तक और सटीक भाषा के लिए भी 10 अंकों तक दिए जाएंगे।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

© UCLES 2014

[अंक:20]

© UCLES 2014

BLANK PAGE

© UCLES 2014

BLANK PAGE

BLANK PAGE

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

Cambridge International Examinations is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which is itself a department of the University of Cambridge.